







### 3. नक्षत्र

- गृह-मार्ग पर स्थित तारा समूहों को ' नक्षत्र ' (जो स्थान नहीं बदलते) की संज्ञा दी गयी है। ये 27 हैं।
- इस प्रकार ये 27 नक्षत्र पूरे गृह-मार्ग के  $360^\circ$  पर वितरित है। यद्यपि ये सारे नक्षत्र समान विस्तार के नहीं हैं, तथापि ये उन्हें समान विस्तार का माना जाकर तदनुसार प्रत्येक नक्षत्र का कोणीय विस्तार  $360^\circ/27=13^\circ 1/3$  होता है।
- इनके नाम कुछ इस प्रकार हैं:- रोहिणी, हस्त, मूल, आदि।



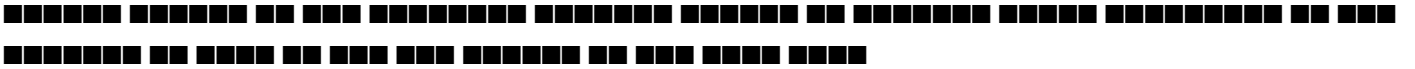






## 5. करण

- यह पंचांग का पांचवां हिस्सा है। करण एक तिथि का आधा है। इसलिए एक तिथि में दो करण होते हैं।
- दूसरी परिभाषा के अनुसार चन्द्र और सूर्य के बीच के दैनिक अन्तर को 6 से भाग देने पर करण प्राप्त होता है।
- करण 11 होते हैं और उनके नाम- बव, बालव, कौलव, आदि हैं।
- करण और योग का ज्ञान दैनिक व्यवहार की दृष्टि से उपयोगी नहीं होता। फलित ज्योतिषि भविष्य वर्तन में करण और योग का उपयोग करते हैं।



## 4.योग

- ❖ पंचांग का चौथे भाग योग है।
- ❖ इस गणना का आधार सूर्य और चंद्रमा की स्थिति है।
- ❖ सूर्य और चन्द्रमा को मिलाकर  $13^{\circ} \frac{1}{3}$  चलने में जो समय लगता है उस समय को एक 'योग' कहते हैं।
- ❖ योग 27 हैं, उनमें से है प्रीति, आयुष्मान, विष्कम्भ, आदि।